01/INNO/ 3/2020/12153

राममनोहर सिन्हा व्यौहार के कला सृजन

रेखा धीमान
सह प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
शा. हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय,
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

सर्वोच्च शिखर सम्मान एवं कलाश्री जैसे सम्मानों से सम्मानित जबलपुर निवासी स्व. श्री राममनोहर सिन्हा अंतर्मन से पर्यावरण से जुड़े रहे । जबलपुर की धरा में पले – बड़े नर्मदा के सानिध्य, प्रकृति प्रेम और सौंदर्य के प्रति कला दृष्टि ने आपको प्रसिद्ध चित्रकार बना दिया। आप मूर्धन्य चित्रकार, भित्ति चित्रकार और प्रकृति प्रेमी के रूप में जाने जाते हैं। विश्व भारती शांति निकेतन कला शिक्षा के दौरान आचार्य नंदलाल बसु, विनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैज तथा विनायक मसोजी जैसे आधुनिक कलाकार गुरूओं ने इनकी कला को निखारने का कार्य किया। यहीं पर जबलपुर के परकम्मावासी अमृतलाल वेगड़ का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। सन् 1957 से 1959 तक बीजिंग में छात्रवृत्ति प्राप्त कर चीनी–चित्रकला का गहराई से अध्ययन किया।इसके पश्चात् शांति निकेतन में अध्यापन और जबलपुर में प्राचार्य का कार्यभार संभाला। भारत सरकार ने नंदलाल बसु को संविधान की मूल हस्तलिखित प्रति को चित्रित करने का कार्य सौंपा। गुरु के साथ राम मनोहर सिन्हा ने इसको अलंकृत करने में प्रमुख योगदान दिया। क्रांतिकारी विचारधारा होने से रानी दुर्गावती की शस्त्र पूजा और 1942 की अगस्त क्रांति जैसे विषयों को लेकर म्यूरल सृजित किये, साथ ही चीनी पद्धति पर आधारित कमल जैसे कोमल विषयों पर चित्रण किया।आपने अनेक देशों की यात्रा कर वहाँ की कला को आत्मसात किया और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। कलायात्रा के चलते एक मूर्धन्य कलाकार ने इन्दौर शहर में 25 अक्टूबर 2007 को अस्वस्थता के दौरान अपनी अंतिम सांस ली। लेकिन वे अपने पीछे कला का एक बड़ा संसार छोड़ गये।

मुख्य शब्द : म्यूरल, केलीग्राफी, इलस्ट्रेशन, वॉशपैंटिंग।

प्रस्तावना

सर्वोच्च शिखर सम्मान से सम्मानित जबलपुर निवासी स्व. श्री राममनोहर सिन्हा अंतर्मन से पर्यावरण से जुड़े रहे, जिसकी अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से की। नर्मदा का सानिध्य, प्रकृति प्रेम और सौंदर्य के प्रति कला दृष्टि ने आपको प्रसिद्ध चित्रकार बना दिया। आप मूर्धन्य चित्रकार, भित्ति चित्रकार और प्रकृति प्रेमी के रूप में जाने जाते हैं। आपको नर्मदा के सौंदर्य और कमल के रूपाकारों ने विशेष रुप से आकर्षित किया। नर्मदा के सौंदर्य को दो चित्रकारों ने विशेष रूप से देखा। एक परकम्मावासी श्री अमृतलाल वेगड़ और दूसरे श्री राम मनोहर सिन्हा व्यौहार। आप दोनों ही जबलपुर से संबंधित रहे और दोनों ने ही शांति निकेतन से शिक्षा पायी।

आपका जन्म 15 जून 1929 को जबलपुर मध्यप्रदेश में हुआ।[1] आपके पिता व्यौहार राजेन्द्र सिंह विख्यात स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार तथा प्रखर गाँधीवादी प्रवृत्ति के थे। आपका संपर्क महात्मा गांधी जैसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी से था। 1948 में कला की विधिवत शिक्षा लेने के लिये विश्व भारती शांति निकेतन वेस्ट बंगाल गये। उस समय आचार्य नंदलाल बसु, विनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैज तथा विनायक मसोजी जैसे आधुनिक कलाकार गुरू रूप में मिले। नंदलाल बसु तो आधुनिक कला के जनक के रूप में जाने जाते है। राम मनोहर सिन्हा को आपका अति स्नेह प्राप्त हुआ। आप नंदलाल बोस के श्रेष्ठ शिष्यों में से एक थे। जबलपुर के ही अमृतलाल वेगड़ दो वर्ष पश्चात् शांति निकेतन पहुँचे। आपकी उनसे अच्छी मित्रता रही।

राम मनोहर सिन्हा ने 1950 में ललित कला में डिप्लोमा किया और सन् 1951 भित्ति चित्र (Mural Painting) में विशेषज्ञ–डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद उन्होंने सन् 1957 में भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर बीजिंग में चीनी चित्रकला का अध्ययन किया।[2]

वहाँ वे 1957 से 1959 तक अध्ययन करते रहे। इस दौरान उनका महान चित्रकार पी–पाई–शी से मिलना हुआ। इनके अलावा अन्य कलाकारों से

मिल कर उनकी कला के दर्शन किये। कला के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि यह कला कठिन कला है जो कि अनुशासन चाहती है। चीनी ब्रश और स्याही से बने चित्र और रेखांकन प्रकृति के प्रति शुद्धता की चाह रखते हैं। यह एक श्रमसाध्य कार्य है, जो कलाकार के अभ्यास से ही आता है। आपने चीनी कला का गहन निरीक्षण कर अभ्यास किया। चित्र बनाना कोई कार्य नहीं बल्कि एक साधना है। अतः आपने गहन साधना करके चित्र बनाये।

चीन से लौटने के पश्चात् आप शांति निकेतन आये और लगभग दस वर्ष तक कला के अध्यापक के रूप में कार्य किया। सन् 1962 में वे जबलपुर वापस आये। यहां शासकीय आर्ट कालेज खुल जाने पर इस कालेज के प्राचार्य पद पर पदस्थ हुए और यहीं से 1989 में सेवानिवृत्त हुए। वे 1975 में खैरागढ़ के इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के कला संकाय के डीन (अधिष्ठाता) रहे। इनके निर्देशन में अनेकों छात्रों ने शोध कार्य किया। 1986 में शासकीय ललित कला संस्थान, जबलपुर के संस्थापक सदस्य रहे और यही निदेशक के पद पर रहकर कार्य किया।[3]

जिस समय आप शांति निकेतन में कला की शिक्षा ले रहे थे उस समय भारत के संविधान की मूल हस्तलिखित प्रति को चित्रित करने का दायित्व भारत सरकार ने नंदलाल बसु को सौंपा था। आपने कुछ चुने हुए छात्रों द्वारा यह कार्य पूरा करवाया। इसमें राम मनोहर सिन्हा का प्रमुख योगदान रहा। संविधान की हस्तलिखित मूल प्रति के प्रत्येक पृष्ठ को हाथों से सजाया गया था।

इसी प्रकार शांति निकेतन को जबलपुर स्थिति एवं नवनिर्मित स्मारक (शहीद स्मारक) की चित्र सज्जा का कार्य भी मिला। यहाँ पर सिन्हा जी ने क्रांतिकारी म्यूरल (भित्ति चित्र) बनाये हैं, जिनमें

1. रानी दुर्गावती की शस्त्र पूजा
2. 1942 की अगस्त क्रांति
3. 1950 में अनेकों म्यूरल बनाये और 1952 में शहीद स्मारक बनाया।

आपने भारतीय परम्परा और चीनी परम्परा के समन्वय से ही चित्र संसार रचा। केलीग्राफिक कला और भारतीय कला से ही आपकी निजी शैली विकसित हुई। आपके समकालीन कलाकार आधुनिक कला शैली में कर रहे थे। अतः आप मार्डन आर्ट के भय से आतंकित भी हुए और एक समय ऐसा था कि आपने कार्य करना लगभग बंद कर दिया था। पुनः आपकी पत्नी ने चित्र बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। इस प्रकार निजी शैली में असंख्य चित्र बनाकर चित्रों की एक बड़ी श्रृंखला बनायी। 1954 में 'कांग्रेस का ऐतिहासिक कल्याणी सत्र' का इलस्ट्रेशन बनाया, जिसकी प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने प्रशंसा की। उन्होंने पारंपरिक शैली से हट कर निजी शैली में कार्य करना प्रारंभ किया, जो चीनी और भारतीय शैली से सम्बद्ध थी। तब आप कला जगत में अपना स्थान बना पाये। इस शैली में असंख्य चित्र बनाकर देश के महानगरों में एकल प्रर्दशनियाँ आयोजित की। जिनमें भारत भवन, ललित कला अकादमी दिल्ली, म.प्र. कला परिषद्, कला भवन शांति निकेतन एवं अरूपायन कलकत्ता आदि संस्थाओं द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनियों और शिविरों में हिस्सा लिया। देश–प्रदेश के अनेक महत्वपूर्ण कला आयोजनों में सम्मिलित हुए।

1957 में चीन के प्रसिद्ध कलाकार ची–पाई–शी, ली–ख–रान, वू–जो–रेन जैसे महान चित्रकारों के साथ कला साधना की। आपने शिक्षाविद् राधाकृष्णन से भेंट की, जिन्होंने अध्यापन को जीवन का उद्देश्य बनाने के लिये प्रेरित किया। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 1959 में नंदलाल बोस के आग्रह पर शांति निकेतन में पुनः अध्यापन कार्य किया। आपने जामिनी राय और सत्यजीत रे के साथ कला साधना की। चीनी संस्कृति के अलावा यूरोपीय संस्कृति और पुनर्जागरण काल पर भी वृहद अध्ययन किया।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, पं. रविशंकर शुक्ल के विशेष अनुरोध को ध्यान में रखते हुए सन् 1961 में वापस जबलपुर आये और यहाँ कला निकेतन में ललित कला में वॉश तकनीक में चित्रण कार्य किया। आप 1991 में शासन द्वारा सर्वोच्च सम्मान 'शिखर सम्मान' से अलंकृत किये गये।

न्यूयार्क लंदन में विश्वविख्यात अंतर्राष्ट्रीय कला पारखी 'सदबीज' द्वारा हुसैन, सूजा, हैब्बर एवं सुब्रमण्यम आदि के समकक्ष चित्र प्रदर्शन और आकलन किया गया। बी.बी.सी. लंदन पर व्याख्यान से कला साधक लाभांवित हुए। 2001 में आपको 'कलाश्री' की उपाधि प्राप्त हुई। आपके चित्रों के संग्रह देश विदेश सभी जगह है जैसे विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट म्यूजियम, ब्रिटिश म्यूजियम, टेट गैलरी, केण्डर डाइन कैनेडा, ललित कला अकादमी बीजिंग आदि।[4]

"आप केलीग्राफी–आर्ट और भारतीय कला के समन्वय से विकसित निजी शैली में कार्य करने वाले अकेले कलाकार थे। इंक से बने पारदर्शी रंगों में आपने असंख्य चित्रों की रचना की। दृश्य चित्र विशेष रूप से बनाये हैं। इसके अलावा म्यूरल, ग्राफिक्स, पॉटरी, फोटोग्राफी में भी सिद्धहस्त कलाकार थे। केलीग्राफिक आर्ट के वे मास्टर थे। जल रंग में शीघ्रता से कार्य करने में सधे हुए कलाकार थे। इसके साथ ही अपारदर्शी रंग, पेस्टल तथा टेम्परा में भी चित्रण कार्य किया।"[5]

आपने पुत्र के पास इंग्लैंड में रह कर चित्रण कार्य किया, जिसकी प्रर्दशनी लंदन और अन्य पश्चिमी शहरों में करके अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनायी। आपको चीन के राजदूत ने चित्रों की प्रदर्शनी लगाने के लिये आमंत्रित किया किंतु अस्वस्थता के चलते प्रर्दशनी नहीं कर सके। 'बीमारी की हालत में 25 अक्टूबर 2007 को इन्दौर में इस संसार से विदा हो गये।[6] वे अपने पीछे चित्रसृजन का विस्तृत संग्रह छोड़ कर गये। जिससे कला प्रेमी और शोधार्थी लाभान्वित हो सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

श्री राममनोहर सिन्हा एक निष्ठावान पर्यावरण प्रेमी और प्रवीण कलाकार रहे हैं। कला प्रेमियों को उनकी कलादृष्टि और कलात्मक कार्यों से अवगत कराया जाना प्रमुख उद्देश्य है।

निष्कर्ष

राम मनोहर सिन्हा व्यौहार म. प्र. के प्रमुख कलाकारों में से हैं, जिन्होंने स्वयं के अथक प्रयासों

कलाभिरुचि के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। जलरंग–चित्रण की विशिष्ट शैली आपकी निजी शैली बन गई। प्रयास है कि कलारसिक और शोधार्थी व्यक्तिगत और कलात्मक जीवन से प्रेरणा लेकर नवीन उर्जा संचारित कर सकें और लाभांवित हो सकें।

अंत टिप्पणी

1. *www.rammanoharsinha.com*
2. *म.प्र. शासन संस्कृति विभाग के शिखर सम्मान 1990–91 (रूपंकर कलायें) प्रशस्ति पत्र से*
3. *रूपंकर भारत भवन के तीसवीं वर्षगांठ पर आयोजित एकाग्र पुनरावलोकी प्रदर्शनी संसृति – 13 फरवरी – 11 मार्च 2012*
4. www.saatchion.com/abrsinha
5. *राम मनोहर सिन्हा के पुत्र डॉ. अनुपम सिन्हा से वार्ता अनुसार – दिनांक 4 जुलाई 2011*
6. *hi.m.wikipedia.org/rammanoharsinha*

चित्र